केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान करनाल द्वारा जागसी (सोनीपत) में किसान गोष्ठी आयोजित

दिनांक 7 सितम्बर, 2010 को केन्द्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा वर्ष में कई किसान मेले/दिवस/ गोष्ठी आयोजित करने की श्रृंखला में सोनीपत जिले के जागसी गाँव में किसान गोष्ठी का आयोजन किया गया। यह किसान गोष्ठी जागसी में उन किसानों के खेतों पर आयोजित की गई जहाँ हरियाणा आप्रेशनल पॉयलट प्रोजेक्ट (HOPP) चल रहा है इसके अंतर्गत संस्थान के परामर्श एवं सहयोग से उपसतही जलनिकास तन्त्र द्वारा खेतों के नीचे छिद्रदार प्लास्टिक पाइपें बिछा कर घुलनशील व हानिकारक लवणों को खेतों से बाहर निकालने का कार्य किया गया है उन्ही खेतों पर संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न लवणसहनशील प्रजातियों में धान की सीएसआर 10, 13, 23, 27,30 व 36 एवं धान की अन्य विभिन्न प्रजातियों के अलावा, पेड़ पौधों की प्रजातियाँ भी परीक्षण एवं प्रदर्शन हेतु लगाई गई है। इसी गाँव के एक किसान के खेत पर तालाब बनाकर मछली पालन का कार्य भी शुरू किया गया है।

इस अवसर पर संस्थान के निदेशक डा0 एस0 के0 गुप्ता ने किसान गोष्ठी के मुख्य अतिथि के रूप में भाग लिया। संस्थान के प्रौद्योगिकी मूल्यांकन एव प्रसार प्रभागाध्यक्ष डा0 आर0 एस0 त्रिपाठी की अध्यक्षता में संस्थान के विभिन्न विषय के वैज्ञानिकों की टीम में शामिल प्रधान वैज्ञानिक डा0 पी0सी0 शर्मा, डा0 प्रदीप डे, वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 एच0एस0 जाट, डा0 आर0के0 सिंह, डा0 एस0के0 सिंह, डा0 सत्येन्द्र कुमार गेहूं अनुसंधान निदेशालय करनाल के फसल सुरक्षा वैज्ञानिक डा0 के0 एस0 बाबू एवं हरियाणा कृषि विभाग एचओपीपी के उपपरियोजना निदेशक श्री जे0 पी0 वर्मा द्वारा किसानों की कृषि सम्बन्धी समस्याओं का समाधान किया गया।

संस्थान तकनीकियों की जानकारी लेने हेतु बरसात का मौसम होने के बावजूद भी गाँव जागसी एवं आस–पास के गांवों के लगभग 300 किसानों ने किसान गोष्ठी में भाग लिया।

एच ओ पी पी के उपपरियोजना निदेशक श्री जे पी वर्मा ने अपने विभाग द्वारा किए जा रहे कार्य पर प्रकाश डाला उन्होंने किसानों की सहभागिता के लिए उनका धन्यवाद किया। श्री वर्मा ने बताया कि वैसे तो इस तंत्र में कम ही खराबी आने की गजांईस है लेकिन एच ओ पी पी के अधिकारी किसानों के साथ है।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 आर0 के0 सिंह किसान गोष्ठी के समन्वयक एवं संयोजक रहे उन्होंने किसानों के ज्ञानवर्धन हेतु नई पहल करके एक कृषि ज्ञान प्रतियोगिता आयोजित की जिसमें परम्परागत खेती एवं आधुनिक खेती सम्बन्धित किसानों से विभिन्न प्रश्न पूछे गए। निर्णायक मण्डल के अनुसार चौ0 धर्म सिंह राठी प्रथम, श्री पाल सिंह द्वितीय तथा श्री काला सिंह तृतीय स्थान पर रहे। विजयी किसानों को संस्थान के निदेशक एवं मुख्य अतिथि डा0 एस0 के0 गुप्ता द्वारा पुरस्कृत किया गया।

किसान गोष्ठी के आयोजन में जागसी गांव के दोनो संरपच श्रीमती मंजू रानी व चौधरी भूपसिंह के अलावा अन्य प्रगतिशील किसान चौधरी रामेश्वर व चौधरी धर्मबीर आदि शामिल रहे।

संस्थान के निदेशक एवं किसान गोष्ठी के अध्यक्ष डा0 एस0के0 गुप्ता ने गाँव व आस–पास से आये सभी किसानों का स्वागत किया। अपने अध्यक्षीय अभिभाषण में डा0 एस0 के0 गुप्ता ने संस्थान की गतिविधियो एवं उपलब्धियों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुये बताया कि

इस संस्थान द्वारा प्रतिवर्ष 45 हजार हैक्टर लवणग्रस्त मृदाओं को सुधारा जा रहा है इस प्रकार संस्थान द्वारा अभी तक 18 लाख हेक्टेयर लवणग्रस्त मृदाओं को सुधारा जा चुका है जिससे देश को वार्षिक 15 मिलियन टन अतिरिक्त खाद्यान मिल रहा है साथ में रोजगार के अवसर भी प्राप्त हुये हैं। निदेशक ने संस्थान में की जा रही बहुधंधी कृषि का उदाहरण देते हुये कहा कि सुधरी हुई मृदाओं में धान–गेहूँ के फसलचक्र की बजाय पशुपालन, मछली पालन, फलों, फूलों व सब्जियों आदि की खेती करना सीमान्त किसानों के लिये लाभप्रद होता है। धान–गेहूँ के फसल चक्र से 6 महीने बाद आमदनी होती है अतः बहुउद्देशीय खेती से नियमित आमदनी होती रहती है तथा प्राकृतिक संसाधनों में वायु, मृदा, जल आदि को भी नष्ट होने से बचाया जा सकता है। डा0 गुप्ता ने कहा कि संस्थान में राष्टीय एवं अतंर्राष्ट्रीय स्तर की कई परियोजनाएं कृषि को बढ़ावा देने के लिये लागू की गई हैं परन्तु अभी भी हमारे वैज्ञानिकों के सामने यह चुनौती है कि दिनो–दिन बढ रही प्रति हेक्टेयर लागत को कैसे कम किया जाये और पैदावार बढायी जाये। डा0 गुप्ता ने किसानों से आह्वान किया कि वें वैज्ञानिकों के साथ मिलकर एवं उनके परामर्श अनुसार वैज्ञानिक ढंग से खेती करें और लवणसहनशील प्रजातियाँ एवं कम पानी की मांग की तकनीक अपनाये ताकि प्राकृतिक संसाधनों को भी बचाया जा सके और कम लागत में अधिक पैदावार ली जा सके।

कुछ अन्य वैज्ञानिकों द्वारा भी लवणग्रस्त मृदाओं की सुधार तकनीक व निम्न गुणवत्ता वाले पानी के कृषि में उपयोग, फसल विविधिकरण, प्राकृतिक संसाधन प्रबन्धन, जीरोटिलेज तकनीक, लवणसहनशील प्रजातियों की जानकारी भू–जल रिचार्ज तकनीक आदि पर अपने अपने विचार व्यक्त किये गये।

संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डा0 एस0 के0 सिंह द्वारा मंच संचालन किया गया तथा मुख्य अतिथि, आगुन्तकों, किसानों आदि का धन्यवाद किया गया ।